मिशन शिक्षण संवाद

पहेली विशेषांक

बाल साहित्य सृजन

माह - फरवरी 2026

मिशन शिक्षण संवाद बाल साहित्य सृजन टीम

सोमवार

बाल साहित्य सृजन

02.02.2026

1

बूझो फल पहेली

विटामिन सी होता है इसमें,
पेड़ों पर यह लगता है।
बच्चे-बड़ों सभी को भाता,
स्वाद में खट्टा-मीठा लगता है।।

पीले-हरे रंग का होता,
आकार में होता गोल।
बीजों वाला फल है यह,
बोल सको तो नाम बोल।।

उत्तर-

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

2

बूझो फल पहेली

मीठा- मीठा, लाल- लाल,
फल होता है बड़ा स्वाद।
कश्मीर,किन्नौर में वह उगता है,
बताओ बच्चों क्या होता है।।

बीमारी में उसको खाते,
व्रत, उपवास में भी खाते।
मीठा रसभरा लाल फल,
बताओ बच्चों कौन सा फल।।

उत्तर-

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० निवाड़ा
निवाड़ा, बागपत

3

बूझो फल पहेली

स्वाद में खट्टा फल होता है,
बच्चों के मन को भाये।
कच्चा भी खाते हम इसको,
चटनी इसकी खूब लुभाये।।

नाम संस्कृत में तिण्तिडी है,
Tamrind है अंग्रेजी।
गाँव की गलियों का ये फल,
नाम बताओ जीजी?

उत्तर-

रचना-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

4

बूझो फल पहेली

सब के मन को भाता है,
सभी फलों का राजा है।
पूरे साल नहीं यह मिलता
गर्मी में मिलता ताजा है।।

टाँग न होती इसके फिर भी,
यह लंगड़ा कहलाता है।
दूध मिला कर पीना इसको,
बड़ा मज़ा फिर आता है।।

उत्तर-

रचना-
बृजराज सारस्वत (स०अ०)
उ० प्रा० वि० गोपालगढ़ (1- 8)
नगर क्षेत्र मथुरा, मथुरा

03.02.2026 मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1

1-
फल हूँ मैं फूला, फूला,
हवा चले झूलूँ, झूला।
हरा भी मैं लाल, पीला,
खट्टा-मीठा और रसीला।।

2-
गुच्छा होता तह से भरा,
मीठा सफेद गूदा मेरा।
मुझे छीलकर के सब खाते,
बन्दर तो गुच्छा ही ले जाते।।

1-आम,
2-केला

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

2

1-
काँटों में मैं रहता हूँ,
अनेक रंगों का होता हूँ।
फूलों में सबसे सुन्दर हूँ,
बताओ मेरा नाम?

2-
भोर होते ही खिल जाता हूँ,
शाम होते ही मुरझाता।
पीले रंग में सुन्दर दिखता,
नाम मेरा क्या कहलाता?

1- गुलाब
2-सूरजमुखी

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि०- राजपुर
मथुरा, मथुरा

3

1-
सब्जी का मैं राजकुमार,
चाहे मुझे भूनकर खाओ।
गरम कचौड़ी और पकौड़ी,
गरमा-गरम समोसा भी।।

2-
लाल-लाल और रसेदार हूँ,
स्वादिष्ट और मजेदार हूँ।
अपनी बुद्धि लगाओ यार,
मेरा नाम बताओ यार।।

1- आलू
2- टमाटर

रचना-
प्रवीणा दीक्षित (स०अ०)
के० जी० बी०- नगर क्षेत्र
नगरक्षेत्र, कासगंज

4

1-
टेढ़ी-मेढ़ी मैं बन जाती,
मीठा पानी मैं पी जाती।
गर्म-गर्म जब बन जाऊँ,
सबके मन को ललचाऊँ?

2-
खोवा, मैदा संग हो जिसमें,
काला-काला रंग है इसमें।
मीठा-मीठा रस भर जाता,
कौन हूँ मैं जो सबको भाता?

1-जलेबी
2- रसगुल्ला

रचना-
शहनाज बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

04/02/2025 बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

बूझो तो जानें

रोज सवेरे आता है,
अंधेरे को भगाता है।
फूलों को मुस्काता है,
चिडियो को चहकाता है।।

बहुत नामों से जाना जाता,
सबका साथ खूब निभाता।
किरणो के रथ पर आ जाता,
शाम को यह भी सो जाता।।

उत्तर- सूरज

इला सिंह(स.अ)
कम्पोजिट विद्यालय पनेरूवा
अमौली फतेहपुर

2

बूझो तो जानें

भोजन अपना स्वयं बनाते,
सूरज की रोशनी में जब होते।
आंधी-तूफानों से ना घबराते,
पर्यावरण को शुद्ध बनाते ।।

वर्षा के संवाहक होते,
ठंडी-ठंडी हवा बिखेरते।
सबको जीवन दान हैं देते,
बोलो हम क्या कहलाते हैं।।

उत्तर-पेड़

माला सिंह(स०अ०)उच्च
प्रा०वि०-भरौटा(1-8)
ब्लॉक-सरधना
जनपद-मेरठ

3

बूझो तो जानें

संदेश इससे भेजते,
बधाई इससे पहुंचाते।
प्यारा आपस में बढ़ाता,
डाकिया इसे हमें देता।।

दूरियों को कम करता,
लोगों को पास लाता।
मन की बात पहुंचाता,
पोस्ट-आफिस में मिलता।।

उत्तर -पत्र

आरती यादव(स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय रनियां -1
सरवनखेड़ा कानपुर देहात

4

बूझो तो जानें

नदी, झरने सब मुझसे बनते,
पृथ्वी की सुंदर शोभा बुनते।
पशु- पक्षी सब मुझपर निर्भर,
बिन मेरे मानव जीवन दुर्भर।।

प्यासे की मैं प्यास बुझाती,
पेड़ पौधों पर हरियाली लाती।
मैं हूं जीवन का सुखद आधार,
बच्चों मुझे ना करों व्यर्थ बर्बाद।।

उत्तर- जल

नीलम भास्कर (स०अ०)
पी एम श्री उ०प्रा०वि०सिसाना
बागपत, बागपत

05/02/2026 गुरुवार

बाल साहित्य सृजन

1

बूझो पहेली

रंग बिरंगे पंखों वाला,
इक पंछी है मतवाला।
कन्हैया जी का प्यारा,
राष्ट्रीय पंछी हमारा।।

उत्तर (मोर)

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2

बूझो पहेली

मैं गोल-गोल चमकूँ,
आसमान में रहूँ।
सुबह-सुबह आऊँ,
सबको उजाला दूँ।
पेड़-पौधे हँसें,
पंछी गाना गाएँ।
दिन मेरा नाम ले,
बताओ मैं क्या कहलाऊँ?

उत्तर (सूरज)

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3

बूझो पहेली

कभी मैं कुछ न खाता हूँ,
कभी न कुछ भी पीता हूँ।
घर की रखवाली करने में,
बस पूरा जीवन जीता हूँ।।

उत्तर (ताला)

पारुल चौधरी (स·अ·)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4

बूझो पहेली

काले रंग के चादर पर,
छिटकी सफेद मोती है।
पढ़ता-लिखता जो इसे,
दुनिया उसकी होती है।

उत्तर (अक्षर)

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

06/02/2026 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1 पहेलियाँ

म्याऊँ-म्याऊँकरती है,
कुत्तों से वह डरती है ।
चूहें खाना उसका काम,
बोलो बच्चों उसका नाम।।

गोल-गोल और हरा-हरा,
भीतर लाल व रस भरा।
गर्मी में वो खाया जाता,
सबके मन को खूब भाता।।

बिल्ली, तरबूज

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2 पहेलियाँ

हवा में उड़-उड़ कर,
बादलों से बाते करती।
ऊँची उड़ान भर कर,
एक डोर से बंधी रहती।

गर्मियों के मौसम में,
फलों का राजा आता।
अपने रसभरे स्वाद से,
सबके मन को भाता।।

पतंग, आम

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3 पहेलियाँ

रात को आसमान में,
वह चमक अपनी फैलता।
प्यारे बच्चों नाम बताओ,
वह क्या कहलाता।।

हवा के संग संग आसमान में,
वह खूब उड़ती जाती।
पकड़ते बच्चे डोर उसकी,
वह आसमान की सैर कर आती।।

चंद्रमा, पतंग

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4 पहेलियाँ

टिक-टिक करके,
समय बताती।
एक चाल से,
चलती जाती।।

तीन अक्षर का,
मेरा नाम।
उल्टा सीधा,
एक समान।

घड़ी, नयन

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

07/02/2026 शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1

बूझो तो जाने

हरा-पीला मोटा ताजा,
हर मौसम में पाया जाता।
ख़ूब रसीला मीठा-मीठा,
बच्चो जानो फल कौन सा?
यकृत जैसा दिखता है।
वजन नियंत्रित रखता है,
विटामिन ए सी से भरपूर,
पाचन दुरुस्त रखता है।।

उत्तर-पपीता

रचना
सुमन पाण्डेय प्र.अ
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फ़तेहपुर

2

बूझो तो जाने

पीला-पीला है रंग मेरा,
खोल पहनता हूँ मैं रोज़।
बिना दांत भी लोग हैं खाते,
मिटे थकान, मिले है जोश।।
छिलका फेंको संभलकर,
फिसलन का है खेल।
बताओ कौन-सा फल हूँ मैं,
जो देता है बल-मेल।।

उत्तर-केला

रचना
सुषमा त्रिपाठी स०अ०
कंपोजिट उ० प्रा० वि० खजनी
(रुद्रपुर), गोरखपुर

3

बूझों तो जाने

आकार में होता गोल,
डाक्टर बोले प्यारे बोल।
नहीं देखते इसका मोल,
खाने से सेहत नही डोल।।
रंग में होता हल्का लाल,
दिल का रखता ख्याल।
विटामिन सी से मालामाल,
नाम बताओ मेरे प्यारे लाल।।

उत्तर-सेब

रचना
प्रतिमा उमराव स०अ०
कम्पोजिट विद्यालय अमौली
अमौली, फतेहपुर

4

बूझो तो जाने

बाहर से लाल हरा,
अन्दर से हूँ लाल।
दाने दाने में दाँत हैं,
यही है मेरा कमाल।।
रक्त की कमी दूर करता,
रक्तचाप दुरुस्त रखता।
विटामिन फाइबर से भरपूर,
खाओ मुझको बीमारी दूर।।

उत्तर-अनार

रचना
रूपी त्रिपाठी(स०अ०)
उ०प्रा०वि०लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

सोमवार

09.02.2026

बाल साहित्य सृजन

1

बूझो फल पहेली

पहाड़ों पर यह होती है,
सबके मन को भाती है।
बच्चे-बूढ़े सभी हैं खाते,
सब इसके ही गुण हैं गाते।।

छिलके में यह बन्द है रहती,
अन्दर से रसधार है बहती।
बड़ी रसीली रहती है,
भूरे रंग की होती है।।

उत्तर- लीची

रचना-
बृजराज सारस्वत (स०अ०)
उ० प्रा० वि० गोपालगढ़ (1-8)
नगर क्षेत्र मथुरा, मथुरा

2

बूझो फल पहेली

पीले रंग का होता है,
बीज न गुठली इसमें।
बच्चों का प्रिय होता,
बहुत ऊर्जा जिसमें।।

कदलीफलम् है संस्कृत में,
अंग्रेजी में कहते Banana.
दूध के संग ज्यादा पौष्टिक,
नाम तो जरा बताना।।

उत्तर- केला

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

3

बूझो फल पहेली

खट्टा-मीठा फल होता है,
विटामिन 'सी' से भरपूर।
रंग होता है उसका संतरी,
खाया होगा सबने जरूर।।

खट्टा-मीठा स्वाद उसका,
खाते सभी मजे लेकर।
खुशबू से पहचाना जाता,
स्कर्वी रोग में बहुत बेहतर।।

उत्तर- संतरा

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० निवाड़ा
निवाड़ा, बागपत

4

बूझो फल पहेली

लाल है अन्दर, बाहर लाल,
दाने इसके बड़े कमाल।
मोती जैसे दिखते हैं,
मीठे-मीठे लगते हैं।।

फल मँहगा, पर पौष्टिक होता,
खून बढ़ाता, ताकत देता।
'अ' से शुरू है नाम निराला,
नाम बताओ मिट्ठू-माला ?

उत्तर- अनार

रचना-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

10.02.2026

मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1

1-
मोटा-मोटा कपड़ा पहने,
मुझे छीलकर खाते हैं।
हरा हूँ जब कच्चा होता,
पके में पीला मुझे पाते हैं।।

2-
लम्बे पेड़ों पर पाया जाता,
ऊपर से कठोर मेरा आकर।
कच्चे में मेरा पानी पीते,
चढ़ाते मुझको मन्दिर के द्वार।।

1- केला
2- नारियल

रचना-
शहनाज बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

2

1-
रंग-बिरंगे, प्यारे-प्यारे,
काँटों के संग उगते हैं।
खुशबू महके, पल्लव हल्के,
छूने से ही टूटते हैं।।

2-
सफेद रंग का महकता रहता,
ठाकुर जी श्रंगार करें।
कलियाँ भी धागे में पिरोयें,
सुन्दर सुगन्धित हार बनें।।

1- गुलाब
2- बेला

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

3

1-
सफेद रंग की होती जो,
स्वाद जिसका तीखा।
जमीन के अंदर होती,
बताओ नाम उसका।।

2-
छोटे-छोटे दाने मेरे,
हरे-रंग के प्यारे-प्यारे।
एक पंक्ति में बैठकर,
घर के अन्दर छुपे रहते।।

1- लहसुन
2- मटर

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि०- राजपुर
मथुरा, मथुरा

4

1-
खोया, काजू संग गरी,
मिलकर करती तबियत हरी।
मुझे देख मुँह पानी देता,
मिठाईयों की हूँ महिला नेता।।

2-
आग के दरिया में तैर जाता हूँ,
चासनी में सदा नहाता हूँ।
वैसे मैं गैंद की तरह गोल हूँ,
स्वादिष्ट बनकर सब को भाता हूँ।।

1- बर्फी
2- रसगुल्ला

रचना-
प्रवीणा दीक्षित (स०अ०)
के० जी० बी०- नगर क्षेत्र
नगरक्षेत्र, कासगंज

11/02/2025 बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

बूझो तो जानें

सुबह सुबह यह दिखाई देती,
धूप मे यह कहीं चली जाती।
घास मे नमी का अह्सास कराती,
सूरज से यह बहुत ही शर्माती।।

पौधों पर यह बिखरी रहती,
हिमकण से भी यह जानी जाती,
बच्चो मेरा जल्दी से नाम बताओ,
मेरी सबसे तुम पहचान कराओ।।

उत्तर- ओस

इला सिंह(स.अ)
कम्पोजिट विद्यालय पनेरूवा
अमौली फतेहपुर

2

बूझो तो जानें

सर- सर सर सर बहती हैं,
आंखों से ना दिखती हैं।
लेकिन महसूस होती हैं,
ठंडक सबको देती है।।

गर्मियों में सबको भाती है,
सर्दियों में कुछ सताती है।
न जाने किधर से चली आती है,
बतलाओ क्या कहलाती।।

उत्तर-हवा

माला सिंह(स०अ०)उच्च
प्रा०वि०-भरौटा(1-8)
ब्लॉक-सरधना
जनपद-मेरठ

3

बूझो तो जानें

पानी से भरा होता,
नीला रंग इनका होता।
सूरज को यह ढक देते,
अंधेरा यह कर देते।।

गर्मी को दूर भगाते,
जब यह बरसते।
हवा संग उड़ जाते,
धरती की प्यास बुझाते।।

उत्तर-बादल

आरती यादव(स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय रनियां -1
सरवनखेड़ा कानपुर देहात

4

बूझो तो जानें

चांद की मैं सखी सहेली,
अंधेरे में रौशनी हूं भरती।
मुझे सब कहते रात रानी,
ढेरों कहानी सुनाती नानी।।

लड़कियों के नाम की पसंद,
झूमते बच्चे और लेते आनंद।
ठंडी हवा संग सुखद अहसास,
मेरा नाम बताएं और पाएं प्रसाद।।

उत्तर- चांदनी

नीलम भास्कर (स०अ०)
पी एम श्री उ०प्रा०वि०सिसाना
बागपत, बागपत

12/02/2026

बाल साहित्य सृजन

गुरुवार

1 बूझो तो जानें

रात को आये आसमान में,
चांदनी बिखराये छत दालान में,
धरती के चक्कर है लगाता,
बताओ क्या ये कहलाता?

संसार को देता है ये उजाला,
सुबह सुबह आता मतवाला,
दिनकर भी कहते हैं इसको,
नाम बताओ इसका निराला।

उत्तर (चांद, सूरज)

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2 बूझो तो जानें

मैं गिर-गिर आऊँ,
सबको भिगो जाऊँ।
काग़ज़ की नावें,
मेरे संग तैराऊँ।
खेतों को हरा करूँ,
मेंढक टर्र-टर्र गाएँ।
बच्चे खुश हो जाएँ,
बताओ मैं कौन कहलाऊँ?

उत्तर (बारिश)

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3 बूझो तो जानें

बिना आँख के रोता हूँ,
बिना पँख के उड़ता हूँ।
काला अंधियारा सा मैं,
इधर उधर को मुड़ता हूँ।।

कभी नहीं मैं थमती हूँ,
चौबीस घंटे चलती हूँ।
मेरे बिन न जीवन संभव,
धीरज बेहद रखती हूँ।।

उत्तर (बादल, धरती)

पारुल चौधरी (स·अ·)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4 बूझो तो जानें

कच्चा खाओ खट्टा लगता है
पक्का खाओ जी ललचाता।
फलों का मुझको राजा कहते,
जल्दी से मेरा नाम बताओ।

मेरे बिना ना बने समोसा
पूड़ी पराठा या हो ढोसा।
सब्जियों का मैं राजा हूं,
नाम मेरा क्या तुमने सोचा??

उत्तर (आम, आलू)

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

13/02/2026

शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1 पहेलियाँ

भौं भौं,भौं भौं करता हूँ।
मैं डंडे से खूब डरता हूँ,।
वफादार सब कहते मुझको,
घर की रखवाली करता हूँ।।

काला काला कहते मुझको
काँव काँव मैं करता हूँ।
रोटी के टुकड़ों को उठाकर
तेज उड़ानें भरता हूँ।।

कुत्ता, कौआ

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2 पहेलियाँ

जंगल का राजा,
वो कहलाता है।
अपनी दहाड़ से,
सबको डराता है।।

मीठी-मीठी बोली से,
मधुर संगीत सुना रही।
कुहू-कुहू का गीत,
हम सबको सुना रही।।

शेर, कोयल

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3 पहेलियाँ

हरे और पीले रंग का फल,
मैं कब्ज को दूर भागता हूँ।
कच्चा हो या हो पक्का,
दोनों रूप में खाया जाता हूँ।।

लाल लाल दाने मुझमे,
रंग भी मेरा लाल है।
सेहत का खजाना मुझमें,
स्वाद भी बेमिसाल है।।

पपीता, अनार

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4 पहेलियाँ

मीठा हूँ मै खाने में,
दिखने में लम्बा पतला।
विटामिन सी से हूँ भरपूर,
मुझे खाना जरूर।।

अन्दर से हूँ लाल रंग का,
मीठा और रस भरा।
हरे रंग का ऊपर,
ओढता हूँ मोटा छिलका।।

केला, तरबूज

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

14/02/2026

बाल साहित्य सृजन

शनिवार

1

बूझो तो जानें

जामुनी रंग का छोटा फल,
गर्मियों में मिलता है फल।
मधुमेह नियंत्रित रखने वाला,
आयुर्वेदिक औषधि यह फल।।
गुठलीदार होता यह फल,
पाचन दुरुस्त रखता है फल।
खून की कमी को दूर करता,
बताओ बच्चों कौन सा फल?

उत्तर-जामुन

रचना
सुमन पाण्डेय प्र०अ०
प्राथमिक विद्यालय टिकरी मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

2

बूझो तो जानें

पाचन क्रिया सही करता,
वजन नियंत्रित करता।
उच्च फाइबर इसमें मिलता,
विटामिन सी भी मिलता।।
कब्ज से सबको राहत देता,
इम्यूनिटी खूब बढ़ा देता।
हरा रंग, गोल आकार होता,
बताओ बच्चों नाम क्या होता?

उत्तर-अमरूद

रचना
प्रतिमा उमराव स०अ०
कम्पोजिट विद्यालय अमौली
अमौली, फतेहपुर

3

बूझो तो जानें

गर्मी की रानी कहलाती है,
फलों की शान बन जाती है।
छोटी-छोटी गोल मटोल,
स्वाद में सबको भाती है।।
लाल छिलके में है सजी,
खुरदरी खाल रस से भरी।
अन्दर सफेद रंग का है गूदा,
काँटेदार खाल के भीतर रसगुल्ला।।

उत्तर-लीची

रचना
रूपी त्रिपाठी(स०अ०)
उ०प्रा०वि०लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4

बूझो तो जानें

गोल-गोल सा रूप है मेरा,
रंग है केसरिया प्यारा,
छिलका उतारे धीरे-धीरे,
मिल जाता है रस सारा।।
सर्दी में मैं खूब सुहाता,
सेहत का हूँ रखवाला,
बताओ भला मैं कौन हूँ,
विटामिन-सी का मतवाला?

उत्तर-संतरा

रचना
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
कंपोजिट उ० प्रा० वि० खजनी
(रुद्रपुर), गोरखपुर

सोमवार

बाल साहित्य सृजन

16.02.2026

1

बूझो फल पहेली

दीवारों का रंग हरा है,
कमरे इसके लाल।
कमरों में हैं काले जोगी,
स्वाद है बड़ा कमाल।।

गर्मी में बहुतायत होता,
गोल-गोल आकार।
चार अक्षर का नाम बताओ,
शरबत हो तैयार।।

उत्तर- तरबूज

रचना-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

2

बूझो फल पहेली

न्यूज़ीलैंड में इसी नाम का,
एक प्यारा सा पक्षी होता।
इसी अनोखे फल से तो,
"डेंगू" का उपचार है होता।।

थोड़ा महँगा होता है,
पर बड़ा रसीला होता है।
काले-काले बीज हैं इसके,
गूदा हरा सा होता है।।

उत्तर- कीवी

रचना-
बृजराज सारस्वत (स०अ०)
उ० प्रा० वि० गोपालगढ़ (1-8)
नगर क्षेत्र मथुरा, मथुरा

3

बूझो फल पहेली

पीले रंग का खोल,
बीज है इसके काले।
बहुत ही गुणकारी है,
जितना चाहे खा ले।।

रोग और कमजोरी में,
डॉक्टर कहते इसको खाना।
पता यदि चल गया है,
तो, नाम जरा बतलाना।।

उत्तर- पपीता

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

4

बूझो फल पहेली

गर्मियों के मौसम में आता,
गोल-गोल सबको भाता।
बीज हैं उसके बहुत काम के,
ड्राई फ्रूट में प्रयोग उनका।।

पानी की वह करे पूर्ति,
गर्मियों में वह प्यास बुझाता।
रेतीली मिट्टी उसकी जरूरत,
नदी किनारे उगाया जाता।।

उत्तर-खरबूजा

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० निवाड़ा
निवाड़ा, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

- आओ हाथ से हाथ मिलाएँ - / - बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ -

17.02.2026 | मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1

1-
लाल-गुलाबी पीला-हरा,
पोर-पोर में रस है भरा।
रंग पके पर जैसे हल्दी,
मेरा नाम बताओ जल्दी।।

2-
खट्टा-मीठा मैं हूँ पीला,
अजब निराली मेरी लीला।
काटो, खाओ, जेम बनाओ,
ठण्डा हूँ मैं नाम बताओ।।

1- आम
2- अमरूद

रचना-
प्रवीणा दीक्षित (स०अ०)
के० जी० बी०- नगर क्षेत्र
नगरक्षेत्र, कासगंज

2

1-
सूरज जहाँ-जहाँ को जाता,
वहीं को मैं भी जाता हूँ।
दिखता मैं जैसा गुलदस्ता,
बच्चों जैसा मुस्काता हूँ।।

2-
काँटे मेरा बने खिलौना,
उनके बीच मुस्काता हूँ।
सबके मन को मैं हूँ प्यारा,
खुशबू खूब फैलाता हूँ।।

1- सूरजमुखी
2- गुलाब

रचना-
शहनाज बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

3

1-
तोते जैसा रंग है मेरा,
बड़े स्वाद से सब खाते।
सब्जी, मिठाई, और कोफ्ते,
रायता भी कस-कसकर बनाते।।

2-
तीखी स्वाद में नहीं हूँ लेकिन,
तीखा मेरे नाम संग होता।
हरी-लाल, पीली भी होती,
मुझे ड़ालकर भोजन रंगीन हो।।

1- लौकी
2- शिमला मिर्च

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

4

1-
गोल-गोल है मेरा रूप,
खाने में मीठी लगती।
कुरकुरी दही के साथ,
सबके मन को बहुत भाती।।

2-
दूध को जब खुद पकाया,
गाढ़ापन सबको भाया।
मेवे का जब तड़का लगाया,
मेरा स्वाद निखर के आया।।

1- जलेबी
2- रबड़ी

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि०- राजपुर
मथुरा, मथुरा

आपका दिन शुभ हो..

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण.

शिकायत या सुझाव के लिए व्हाट्सएप करें. 94582 78429

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

18/02/2025 बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

बूझो तो जानें

इसका सफर लगता सुहाना,
बचपन की यादो का खजाना,
हम सब एक कतार बनाते,
जोर से मुँह से सीटी बजाते।।

कोई इसमे गार्ड बन जाता,
कोई ड्राइवर बन खुश होता।
मिलजुल हम सब खेल खेलते,
बताओ बच्चो हम क्या बनाते।।

उत्तर- रेलगाड़ी

इला सिंह(स.अ)
कम्पोजिट विद्यालय पनेरूवा
अमौली फतेहपुर

2

बूझो तो जानें

सीमा पर पहरा देता हूँ,
देश की रक्षा करता हूँ।
आंधी तूफानों से न घबराता हूँ,
जान हथेली पर रखता हूँ।।

अपनों से मोह न करता हूँ,
राष्ट्रभक्ति दिल में रखता हूँ।
जीवन की आहुति देता हूँ,
बोलो मैं क्या कहलाता हूँ।।

उत्तर- सैनिक

माला सिंह(स०अ०)उच्च
प्रा०वि०-भरौटा(1-8)
ब्लॉक-सरधना
जनपद-मेरठ

3

बूझो तो जानें

खेती का काम करता,
फसल यह उगाता।
मेहनती बहुत होता,
देश का गौरव माना जाता।।

खेतों में पसीना बहता,
हम सबका पेट भरते।
मिट्टी से इसका गहरा रिश्ता,
अन्नदाता इसे पुकारते।।

उत्तर- किसान

आरती यादव(स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय रनियां -1
सरवनखेड़ा कानपुर देहात

4

बूझो तो जानें

जब होता तुम्हें बुखार,
पास मेरे आते रफ्तार।
कड़वी दवा तुम्हें खिलाता,
सूई भी मैं तुम्हें लगाता।।

स्टेथोस्कोप गले में रहता,
सफेद कोट मैं पहनता।
रोगियों की सेवा मेरा काम,
बच्चों जल्दी बताओ मेरा नाम।।

उत्तर- डाक्टर

नीलम भास्कर (स०अ०)
पी एम श्री उ०प्रा०वि०सिसाना
बागपत, बागपत

19/02/2026

बाल साहित्य सृजन

गुरुवार

1 बूझो तो जानें

पानी में खिलता हूं,
सुन्दर सा दिखता हूं
राष्ट्रीय पुष्प हूं भारत का,
लाल, गुलाबी होता हूं।

सूरज की ओर देख,
दिन गुजरता है मेरा।
पीले रंग का फूल मैं,
तेल निकलता है मेरा।

उत्तर(कमल, सूरजमुखी)

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2 बूझो तो जानें

मेरे पन्ने होते,
तस्वीरें सजती।
अ-आ-इ सिखाऊँ,
कहानी भी कहती।
बैग में रहती हूँ,
स्कूल रोज़ जाती।
ज्ञान की दोस्त हूँ,
बताओ मैं क्या कहलाती?

उत्तर(किताब)

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3 बूझो तो जानें

कभी न कुछ मैं खाता हूँ,
कभी न कुछ मैं पीता हूँ।
हर घर की रखवाली को,
बस मैं जीवन जीता हूँ।।

झगड़ा मुझसे नहीं है आता,
फ़िर भी मुझको पीटा जाता।
मेरे साथ सब झूमे और गाये,
खुशियों से है मेरा नाता।।

उत्तर (ताला, ढ़ोल)

पारुल चौधरी (स॰अ॰)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4 बूझो तो जानें

लाल नारंगी रंग का फल,
खेत में खड़ा रहता अटल।
विटामिन ए से होता भरपूर,
नाम बताओ इसका हुजूर।।

कच्चा-पक्का मैं खाया जाता,
सलाद व हलवा बनाया जाता।
विटामिन, फाइबर से भरपूर,
दृष्टिदोष को भगाता मैं दूर।।

उत्तर (गाजर, पपीता)

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

20/02/2026 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1 पहेलियाँ

रंग नहीं है रूप नहीं है,
पैरों के बिन चलती है।
तेज चले तो मिट्टी उड़ती,
उससे ही सांसे मिलती हैं।।

हवा, आम

फलों का राजा मैं हूँ भाई,
पक कर मैं पीला हो जाता।
अचार डालो या खाओ साबुत,
खूब रसीला फल कहलाता।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2 पहेलियाँ

हरे सुनहरे रंगों से,
सबको प्यारा लगता है।
मिट्ठू-मिट्ठू आवाज से,
हमारी नकल ये करता है।।

तोता, मधुमक्खी

फूलों के मीठे-मीठे रस से,
शहद का छत्ता बनाती है।
गुस्सा होकर अपने ठंक से,
बहुत जोर से काटती है।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3 पहेलियाँ

बच्चों के संग-संग,
मैं भी स्कूल जाता हूँ।
कॉपी किताबें रखते है मुझमें,
बताओ मैं क्या कहलाता हूँ।।

बस्ता, पेन्सिल

बच्चों की लिखावट को,
मैं सुंदर बनाती हूँ।
बच्चे करते गलती लिखने मे,
मै रबड़ से मिट जाती हूँ।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4 पहेलियाँ

काले रंग की दिखती,
कू-कू, मीठा बोलती।
पेड़ पर बैठ गीत सुनाए,
बसंत आते ही गुनगुनाए।।

कोयल, मोर

सबको वह नृत्य दिखाता,
चारो ओर पँख फैलाता।
नीले पँख की छटा दिखाकर
सबके मन को खुश करता।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

21/02/2026 शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1

बूझो तो जाने

छोटी गेंद सा दिखता हूँ,
पीले रंग का होता हूँ।
स्वाद मेरा खट्टा होता,
विटामिन-सी से भरपूर हूँ।।

हरी-भरी हूँ पत्तों वाली,
सबमें खून बढ़ाने वाली।
आयरन कैल्शियम से भरपूर,
मुझे खाने से बीमारी रहे दूर।।

उत्तर-नींबू, पालक

रचना
सुमन पाण्डेय प्र.अ
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

2

बूझो तो जाने

मिट्टी में छुपी रहती हूँ,
लाल रंग की दिखती हूँ।
आँखों के लिए बहुत अच्छी हूँ,
सबको अच्छी लगती हूँ।।

जमीन में छिपा बैंगनी खजाना,
काटो तो लाल रस बहता सारा।
सलाद में डालो या जूस बना लो,
ताकत देता कमजोरी भगाता।।

उत्तर-गाजर, चुकंदर

रचना
रूपी त्रिपाठी(स०अ०)
उ०प्रा०वि०लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

3

बूझो तो जाने

मिट्टी में मैं छुपा रहता,
मेहनत से बाहर आता।
उबलूँ तो नरम-नरम,
तलने पर कुरकुरा बन जाता।।

हरा पहनकर पैदा होता,
लाल बनकर मुस्काता।
सलाद में संग रहता,
सब्ज़ी का स्वाद बढ़ाता।।

उत्तर-आलू, टमाटर

रचना
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय अमौली
अमौली, फतेहपुर

4

बूझो तो जाने

उंगली जैसी मैं लंबी सी,
बीजों को धारण करती हूं।
हरे रंग की सूरत मेरी,
फाइबर के गुण मै रखती हूं।।

लंबा सा मेरा आकार,
कोलेस्ट्रॉल पर करु प्रहार।
बी पी दूर भगाती हूँ,
सभी के मन को भाती हूँ।।

उत्तर-भिन्डी, लौकी

रचना
सुषमा त्रिपाठी स०अ०
कंपोजिट उ० प्रा० वि० खजनी
(रुद्रपुर), गोरखपुर

सोमवार

23.02.2026

बाल साहित्य सृजन

1

बूझो फल पहेली

कुछ खट्टा कुछ मीठा फल,
जामुनी रंग का होता फल।
बहुत काम की गुठली उसकी,
बीमारी करता दूर शुगर की।।

जिगर के लिए बहुत अच्छा,
पिया जाता इसका सिरका।
लगता पेड़ों पर बहुत ज्यादा,
बताओ फल क्या कहलाता।।

उत्तर- जामुन

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० निवाड़ा
निवाड़ा, बागपत

2

बूझो फल पहेली

एक कोठरी में भरा,
मीठा-मीठा पानी।
गूदा श्वेत, मुलायम है,
खाते राजा-रानी।।

समुद्री तटों पर ये उगे,
पेड़ों की लम्बी कतार।
कच्चा या फिर पकाकर,
खाते लोग हजार।।

उत्तर- नारियल

रचना-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

3

बूझो फल पहेली

हरा-हरा कंचे के जैसा,
बड़ा रसीला मीठा फल।
सबके मन को भाता है,
खाओ आज या खाओ कल।।

इससे बनता शरबत ऐसा,
जिसको पीते देकर पैसा।
पीकर इसको सुध-बुध खोते,
परेशान घर वाले होते।।

उत्तर- अंगूर

रचना-
बृजराज सारस्वत (स०अ०)
उ० प्रा० वि० गोपालगढ़ (1-8)
नगर क्षेत्र मथुरा, मथुरा

4

बूझो फल पहेली

हरे रंग का छोटा फल,
गुठली इसमें होती एक।
सर्दी के मौसम में आता,
औषधीय फल है यह एक।।

भोलेनाथ को अर्पित करते,
साथ में इसके होते पत्ते।
खट्टा-मीठा स्वाद है प्यारा,
सब इसका सेवन हैं करते।।

उत्तर- बेर

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

24.02.2026 मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1

1-
फलों का राजा कहलाता,
पीले-हरे रंग में पाया जाता।
गर्मियों में खाया जाता,
सबके मन को बहुत भाता।।

2-
मीठा-मीठा रसदार,
बाहर से हरा काटो तो लाल।
अन्दर काले बीज भरे तमाम,
बताओ बच्चों! मेरा नाम।।

२- तरबूज
१- सेब

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि०- राजपुर
मथुरा, मथुरा

2

1-
ब्रह्मा जी का जन्म,
इसी से माना जाता।
सरस्वती का आसन,
राष्ट्रीय-पुष्प भी कहलाता।।

2-
रंगत मेरी सदा निराली,
खुशबू देती है खुशहाली।
झूम रहा मैं मन्द-मन्द हूँ,
सबकी पहली पसन्द हूँ।।

२- गुलाब
१- कमल

रचना-
प्रवीणा दीक्षित (स०अ०)
के० जी० बी०- नगर क्षेत्र
नगरक्षेत्र, कासगंज

3

1-
हरा दरवाजा खोल कर आते,
पाँच-छः मोती मुझमें पाते
जाड़े के मौसम में आते,
हर सब्जी का स्वाद बढ़ाते।।

2-
मैं हरा-बैगनी रंग में आऊँ,
अपने सिर पर ताज मैं पाऊँ।
जब आग के अन्दर भूँजा जाऊँ,
तब स्वादिष्ट भर्ता मैं बन जाऊँ।।

२- बैंगन
१- मटर

रचना-
शहनाज बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

4

1-
गोल बनें बेसन, खोवे के,
मैदा, आटा से भी बनते।
घी संग मेवा, बूरा ड़ाला,
खुशियों में शगुन के बँटते।।

2-
तिल-गुढ़ की मैं एक मिठाई,
मूँगफली की भी बनती।
चीनी की चाशनी में भी,
सभी को स्वादिष्ट लगती।।

२- गजक
१- लड्डू

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

25/02/2025 बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

बूझो तो जानें

वन,उपवन सब मैं बनाती,
अलग रूपों मे पायी जाती।
पर्वत,पठार,मैदान मेरे रूप,
रेगिस्तान भी है मेरा स्वरूप।।

अलग-अलग रंगो मे होती,
काली,लाल,दोमट मेरी पहचान।
भू,धरा,वसुधा अनेकों मेरे नाम,
हर मानव करता मुझ पर गुमान।।

उत्तर- भूमि

इला सिंह(स.अ)
कम्पोजिट विद्यालय पनेरूवा
अमौली फतेहपुर

2

बूझो तो जानें

गहराई की तुलना करता ,
इतना गहरा होता हूं।
ऊपर से मैं चंचल होता,
नीचे शांति से रहता हूँ।।

कभी-कभी मनमोहन लगता,
कभी सुनामी लाता हूँ।
मोती भी मैं रखता हूँ,
बोलो क्या कहलाता हूँ।।

उत्तर- सागर

माला सिंह(स०अ०)उच्च
प्रा०वि०-भरौटा(1-8)
ब्लॉक-सरधना
जनपद-मेरठ

3

बूझो तो जानें

दो किनारे इसके होते,
खेतों की प्यास बुझाती।
नाव भी इस पर चलाते,
पेड़ो को भी पानी पिलाती।।

सागर से यह निकलती,
लगातार बहती रहती।
कल-कल कर यह बहती,
पहाड़ों से यह मिल जाती।।

उत्तर- नदी

आरती यादव(स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय रनियां -1
सरवनखेड़ा कानपुर देहात

4

बूझो तो जानें

ऊंचा विशाल मैं दिखता,
हवाओं का रूख मोड़ता।
जड़ी बूटियों का मैं खजाना,
वन्य जीव का ताना-बाना।।

आसमान से करता बात,
दृढ़ता का सिखलाता पाठ।
नदी, झरना मुझसे निकलते,
मेरा नाम बताओ मिलेंगे पैसे।।

उत्तर- पर्वत

नीलम भास्कर (स०अ०)
पी एम श्री उ०प्रा०वि०सिसाना
बागपत, बागपत

26/02/2026

बाल साहित्य सृजन

गुरुवार

1

बूझो तो जानें

चार पैर मेरे हैं होते,
लोग मुझ पर खूब सोते।
जानवर नहीं हूं, जान लो,
जल्दी से मेरा नाम दो।

तीन पैरों वाला हूं मैं,
सबकी छतों पे हूं लटका,
गर्मी मे देता राहत हूं,
बिजली से मैं हूं चलता।

उत्तर(चारपाई, पंखा)

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2

बूझो तो जानें

मेरे दाँत नहीं,
फिर भी काटूँ।
मेरी नोक से,
सब कुछ लिखूँ।
काग़ज़ से दोस्ती,
रोज़ निभाऊँ।
बच्चों की साथी,
बताओ मैं क्या कहलाऊँ?

उत्तर(पेंसिल)

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3

बूझो तो जानें

काला हूँ पर सबको भाता,
पढ़ना, लिखना मैं सिखलाता।
शिक्षक मुझ पर करते काम,
ज्ञान सभी को हूँ मैं कराता।।

माता कहने भर को हूँ,
फिरती अब मैं दर-दर हूँ।
पूजनीय कहते हो मुझको,
बोलो फ़िर क्यूँ बेघर हूँ।।

उत्तर (श्यामपट्ट, गाय)

पारुल चौधरी (स॰अ॰)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4

बूझो तो जानें

हरी चादर सी ढक लेती हूँ,
मोती सा खुद को रख लेती हूँ।
पोहा, पूड़ी ,पनीर संग बनाओ,
जल्दी से बच्चों मेरा नाम बताओ।।

हरी छत है लाल मकान,
काला बीज रहता महान ।
रसीला फल मुझको कहते,
गर्मियों में होती मेरी पहचान।।

उत्तर (मटर, तरबूज)

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

27/02/2026 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1 पहेलियाँ

मैं सब्जियों का राजा हूँ,
सबके मन को भाता हूँ,
चिप्स,पराठे,टिक्की बनाओ
हर सब्जी में मिल जाता हूँ।।

रंग है मेरा लाल लाल,
सबको लगती बड़ी कमाल,
अचार,सब्जी,सलाद बनाओ
हलुआ मेरा करे धमाल।।

आलू, गाजर

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2 पहेलियाँ

चाकू से काटने पर,
हमें खूब रुलाता है।
सब्जी में डालने पर,
स्वाद को बढ़ाता है।।

विटामिनC से भरपूर,
खाने में खट्टा होता।
पानी के साथ पीने पर,
शरीर को स्वस्थ रखता।।

प्याज , नींबू

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3 पहेलियाँ

हरे रंग की पत्तेदार सब्जी,
मैं हूँ आयरन से भरपूर।
खाता जो कोई मुझको,
रक्त की कमी को करती हूँ दूर।।

रंग है मेरा हरा पीला,
आकर है गोल मटोल।
सब्जी हूँ मैं कौन सी,
मेरे नाम का भेद खोल।।

कद्दू, पालक

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4 पहेलियाँ

मैं हूँ लम्बी, पतली-पतली,
सर्दियो के मौसम मे आती हूँ।
अंदर भरे हरे-हरे दानों से,
सबका मन ललचाती हूँ।।

अंगुल भर हूँ मैं लंबी,
सिर पर ताज सजाती हूँ।
अंदर से हूँ चिपचिपी,
गर्मी के मौसम में आती हूँ।।

मटर, भिण्डी

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

28/02/2026

बाल साहित्य सृजन

शनिवार

1

बूझो तो जाने

गोलमोल मैं थाली जैसा,
रात को आसमान में दिखता।
तारों के बीच हूँ मैं रहता,
हर दिन कलाए बदलता रहता।।

टिम-टिम, टिम-टिम करते रहते,
आसमान में चमकते दिखते।
गिनती करना है बड़ा मुश्किल,
रात को आसमान में दिखते।।

उत्तर-चाँद, तारे

रचना
सुमन पाण्डेय प्र.अ
प्राथमिक विद्यालय टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

2

बूझो तो जाने

रंग बिरंगी मेरी शान,
उड़ती रहती सकल जहान।
बच्चों के हिय को हर्षाती,
बोलो बच्चों क्या मैं कहाती?

रात का दीपक मैं कहलाऊं,
टिम–टिम रोशनी करता जाऊं।
अंधेरी रात को दिखना मेरी शान,
बूझो बच्चों क्या है मेरा नाम?

उत्तर- तितली, जुगनू

रचना
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
कंपोजिट उ० प्रा० वि० खजनी
(रुद्रपुर) गोरखपुर

3

बूझो तो जाने

हरा-हरा रंग मेरा,
पिंजरे में रहता हूँ।
उड़ना जानता हूँ आसमान में,
नकल भी कर लेता हूँ।।

काली-काली चोंच मेरी,
पीला पैर चमकता है।
इन्सानो सी बातें करती,
गटर-पटर सब खाती हूँ।।

उत्तर-तोता, मैना

रचना
रूपी त्रिपाठी(स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4

बूझो तो जाने

नीले-हरे पंख सजाए,
बारिश में ये नाच दिखाए।
राष्ट्रीय पक्षी कहलाता,
बच्चों बताओ कौन?

सबके आंगन में दिखती हूँ,
फुदक- फुदक कर चलती हूँ।
संकटग्रस्त आज हूँ मैं,
घोसला बना कर रहती हूँ।।

उत्तर-मोर, गौरिया

रचना
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय अमौली
अमौली, फतेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद

बाल साहित्य सृजन

रचनाकारों की सूची

1- बृजराज सारस्वत, मथुरा
2- भावना शर्मा, मेरठ
3- शिखा वर्मा, सीतापुर
4- सीमा शर्मा, बागपत
5- नैमिष शर्मा, मथुरा
6- उमा ठाकुर, मथुरा
7- शहनाज़ बानो, चित्रकूट
8- प्रबीणा दीक्षित, कासगंज
9- आरती यादव, कानपुर देहात
10- इला सिंह, फतेहपुर
11- नीलम भास्कर, बागपत
12- माला सिंह, मेरठ
13- पारुल चौधरी, बागपत
14- वन्दना यादव, जौनपुर
15- शिप्रा सिंह, फतेहपुर
16- ज्योति सागर, बागपत
17- पूनम नैन, बागपत
18- अमित गोयल, बागपत
19- अनुप्रिया यादव, फतेहपुर
20- मृदुला वर्मा, कानपुर देहात
21- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर
22- सुमन पाण्डेय, फतेहपुर
23- सुषमा त्रिपाठी, गोरखपुर
24- रूपी त्रिपाठी, कानपुर देहात

तकनीकी सहयोग

1- नैमिष शर्मा, मथुरा

2- जितेन्द्र कुमार, बागपत

मार्गदर्शन- राजकुमार शर्मा, चित्रकूट

संकलन :- काव्यांजलि दैनिक सृजन टीम